analysis are made on students' achievement score on English language, environment studies and mathematics. This study is focused on two educational radio programs namely a) 'English is fun' which is focused to improving English as a second language. b) 'Jhilmil' which is related to Environmental studies and Mathematics. In the present environmental studies and mathematics is basic subject to each and every student in the primary level schools. For which the development of education through the Central and State Government implement many programs / schemes. Educational Radio Program is one of the important initiatives for the development of primary education. In this study researcher has adopted survey method. The major finding of the study the educational radio-based learning in the classroom has proven academic quality in these remotely located tribal hamlets and these students have utilised the radio program though group discussion, student's teacher interaction, conducive classroom situation, improved listening skill. So, it is vital to sustain these programs in these schools for which the polices should be made and to be implemented stringently. Based on the findings of the present study, discussion, suggestions, implementations and conclusion for further research were made. Educational Radio Program aims at quality improvement in teaching learning process of primary schools. Radio programs empower our teachers to use popular media in academic pursuits and enable them to teach using innovative teaching methods. Presently the primary school use a functional method of educational radio programs. Teachers should be encouraged to follow and use innovation in their teaching-learning process.

****

Bibliography:

1.Aaberg, M. (2020). Radio in Music Education: The Indiana School of the Sky Music Episodes, 1947-1948. Journal of Historical Research in Music Education, 1-9. doi:10.1177/1536600620973458
2.Agrawal, J.C. (2013). Educational Technology and Management. Agra: Vinod Pustak Mandir.
3.Ajaegbu, O., Akintayo, B., & Akinjiyan, M. (2015). Radio Listening Habits among University Students and Their Attitude towards Programmes (A Study of
4.Redeemers University Students). Research on Humanities and Social Sciences, 5(12), 149-158. Retrieved from http://www.iiste.org/
5.Alan, G. S. (1993). Listening For Listeners: Educational Radio and Audience Research.
6.Journalish History, 19(1), 11-18.
7.doi:https://doi.org/10.1080/00947679.1993.12062351
8.Allan, D. I. (1948). The British Way of Radio. Hollywood Quarterly, 3 (4), 362-367.
9.Retrieved from www.jstor.org/stable/1209307
10.Anderson, J. E. (1939). The Radio and Child Development. The Phi Delta Kappan,, 316-318. Retrieved from www.jstor.org/stable/20258896
11.Anderson, J., & Lightfoot, A. (2018). Translingual practices in English classroom

हिंदी की राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य-धारा : एक सिंहावलोकन

डॉ. चंद्रकांत सिंह
सहायक प्राध्यापक (हिंदी विभाग)
हिमाचलप्रदेशकेंद्रीय विश्वविद्यालय,
धौलाधार परिसर-01,धर्मशाला,जिला-कांगड़ा,हि.प्र.-176215
मो. न.- 09805792455

हिंदी की राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा ब्रिटिश दासता और औपनिवेशिक मानसिकता की प्रतिक्रिया कही जा सकती है | इस काव्य-धारा ने तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों को न केवल दर्शाने का कार्य किया अपितु समूचे साम्राज्यवाद को सार्थक चुनौती भी प्रदान किया | अंग्रेजी दासता ने समूचे भारतवर्ष को भीतर से खोखला कर दिया था | भारतीय चिंतन परंपरा, भारतीय सांस्कृतिक मूल्य ध्वस्त हो चुके थे | शिक्षा, रोजगार एवं जीवन जीने की पद्धति आदि सब नष्टप्राय हो गये थे | ऐसे में एकाकीपन और असुरक्षा बोध की भावना ने भारतीयों को भीतर तक प्रभावित किया था | भारतीय नवजागरण ब्रिटिश अंधकार से निकलने का एक सार्थक प्रयास है और इसी प्रयास नेहिंदी की राष्ट्रीय- सांस्कृतिक काव्यधारा को जन्म दिया | राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, केशव चंद्र सेन, महादेव गोविंद रानाडे जैसे चिंतकों ने सामाजिक जड़ता को दर कर अखंड भारत की ओर सार्थक कदम बढ़ाया था | सामाजिक-राजनीतिक क्षेत्र में शिथिलता और विभ्रम की जो स्थिति दिखाई देती है, भारतीय कविता उसे हटाती है और समूचे राष्ट्र को एकजुट करती है | हिंदी की राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य-धारा को समय और समाज की परिवर्तनकारी शक्ति के तौर पर देखना होगा | इस काव्य-धारा ने भारत के प्रति अंग्रेजों की विकृत मानसिकता को चुनौती देने के साथ भारत का गौरवशाली इतिहास भी प्रस्तुत किया | भारतीय ज्ञान-धारा एवं जीवन पद्धति के सन्दर्भ में अंग्रेज नकारात्मक प्रचार कर रहे थे, भारतीय राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा ने इस नकारात्मक भाव को जनता के समक्ष रखा और भारत की सांस्कृतिक चेतना का गहन अनुशीलन भी किया जिससे कि भारत की वास्तविक स्थिति उजागर हो सके | अंग्रेजों द्वारा प्रचारित मानसिकता ने भारत को विश्व के समक्ष एक कमजोर राष्ट्र के तौर पर रखने का कार्य किया | भारतीयों ने अंग्रेजों के वास्तविक रूप को जनता के समक्ष लाने का कार्य किया और भारत के स्वर्णिम अतीत को जनजीवन के सामने रखा | अंग्रेजी दमन एवं अहंकार के प्रति विद्रोह की भावना पूरे भारत भर में देखी जा सकती है | विविध भाषाओं एवं बोलियों में पूरा भारत अंग्रेजी आधिपत्य का विरोध कर रहा था | हिंदी कविता भी इससे अछूती न थी, इस काव्य-धारा ने भी क्रांति का रुख अख्तियार करते हुए औपनिवेशिक तंत्र को तार-तार कर दिया था | बात यदि भारतेंदु हरिश्चन्द्र की करें तो उनकी कविताओं में सामाजिक विषमताओं पर प्रहार एवं अंग्रेजों की साम्राज्यवादी स्थिति को देखकर चिंता दिखाई पड़ती है | स्वयं को पराजित मानकर निराश बैठने वाले भारतीयों को उन्होंने जगाने का कार्य किया | वे जागरण का गीत गाते हुए कहते हैं –

जागो जागो रे भाई |
सोअत निसि बैस गँवाई | जागो जागो रे भाई ||
निसि की कौन कहै दिन बीत्यौ काल राति चलि आई |
देखि परत नहिं हित अनहित कछु परे बैरि बस आई ||
निज उद्धार पंथनहिंसूझतसीस धुनतपछिताई |
अबहूँ चेति पकरि राखौ किन जो कछु बचीबड़ाई |
फिरै पछिताये कछु नहिं ह्वै है रहिजैहौ मुँह बाई ||

हिंदी की राष्ट्रीय काव्यधारा हिंदी पट्टी का जातीय स्वाभिमान है जिसमें पूरे हिंदी क्षेत्र की धड़कन सुनाई पड़ती है | प्रो. कृष्ण दत्त पालीवाल जी

कहते हैं कि -- "आधुनिक भारतीय राष्ट्रीय-सांस्कृतिक कविता की जातीय और क्रांतिधर्मी मुद्रा का आविर्भाव ब्रिटिश साम्राज्यवाद से टकराव और संघर्ष की परिस्थिति में होता है | राष्ट्र का उद्दीप्त स्वाभिमान ही मानो इस कविता में उमड़कर प्रवाहित हो उठता है |"

निस्संदेह हिंदी की राष्ट्रीय काव्य-धारा में पूरे भारत का आत्म गौरव परिलक्षित होता है | हिंदी की यह कविता कई मायनों में विशेष है | भारतवर्ष की वास्तविक पहचान इस कविता में दिखती है | प्राकृतिक परिवेश के साथ ज्ञान-चेतना का पूर्ण प्रकटीकरण इस कविता में है | गहन निद्रा में सोने वाले भारतीयों को जगाने के साथ यह कविता शक्ति-काव्य बनकर शक्ति का अजस्र स्रोत भी पैदा करती है जिससे कि वीरों का सही पोषण हो सके |कवि गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' अपनी कविताओं में भारत के इतिहास एवं जीवन-दर्शन को याद करते हैं | सत्य-बल, राष्ट्र के प्रति एकनिष्ठ प्रेम एवं आत्म-बल की दृढ़ता जो प्राचीन भारत में दिखाई पड़ती थी | उसे याद करते हुए, अतीत के सुंदर दृष्टांतों को सँजोते हुए कवि गया प्रसाद शुक्ल सनेही जी वर्त्तमान को नव-वाणी प्रदान करते हैं | वे अपनी कविता 'गुज़रा हुआ ज़माना' में भाव विह्वल स्वर में कहते हैं –

वह सत्य-बल हमारा धीरज अटल हमारा,
वह प्रेम जल हमारा, वह हृत्कमल हमारा |
वह स्वाभिमान अपना, वह प्रण अचल हमारा,
सर्वस्व हाय अब तो है चल विचल हमारा |
आता है याद मुझको गुजरा हुआ ज़माना ||

वह आत्म-बल कहाँ है, सद्ज्ञान अब कहाँ है,
वह धारणा कहाँ है, वह ध्यान अब कहाँ है |
अपनी स्वतंत्रता का अभिमान अब कहाँहै,
वह मान अब कहाँ है सम्मान अब कहाँ है |
आता है याद मुझको गुजरा हुआ ज़माना ||

कवि मैथिलीशरण गुप्त जी 'भारत-भारती' में भारत के मनोहर रूप का वर्णन करते हुए उसे पुण्य भूमि के रूप में आदर देते हैं | ज्ञान-विभा के उत्कर्ष की भूमि,संयम एवं त्याग की भूमि के रूप में उन्होंने भारत का स्मरण किया है | वे कहते हैं -

भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ |
संपूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है ?
उसका कि जो ऋषि भूमि है, वह कौन ? भारतवर्ष है ||

निस्संदेह भारत एक ऐसी भूमि है जहाँ जन्म लेने के लिए देवता भी लालायित होते हैं | यह वह भूमि है जिसने अपने कर्म, आदर्श एवं जीवन से जगत को दिशा देने का कार्य किया | आचरण, कर्म एवं धर्म की सम्पूर्ण बानगी इस देश में मिलती है किन्तु धीरे-धीरे त्याग एवं तितिक्षा की भावधारा मृतप्राय होने लगी | 'भारत भारती' में कवि ने भारत के प्राचीन ज्ञान-गौरव को याद करने के साथ-साथ वर्तमान में भारतीयों की स्वार्थ भावना,आत्मकेंद्रित प्रवृत्ति आदि को भी उल्लिखित किया है | अपनी कविता के माध्यम से गुप्त जी सभी भारतीयों को जगाने का काम करते हैं और उनसे देश-हित, समाज-हित अपना सर्वस्व बलिदान करने की अपील भी करते हैं | अंग्रेजों के दंभ एवं प्रदर्शन को देखकर निःशक्त हो चुकी भारतीय आत्मा को नई वाणी देने की बात गुप्त जी करते हैं | उनकी कविता को भारतीय चेतना की मुखर अभिव्यक्ति कहा जा सकता है -

अब भी समय है जागने का देख आँखें खोल के,
सब जग जगाता है तुझे, जग कर स्वयं जय बोलके |
निः शक्त यद्यपि हो चुकी है किंतु तू न मरी अभी,
अब भी पुनर्जीवन-प्रदायक साज हैं सम्मुख सभी ||

तत्कालीन भारतीय परिवेश अनेक आडम्बरों एवं सामाजिक जड़ताओं से युक्त था, गुप्त जी ने अपनी कविताओं के माध्यम से मोह एवं तमस में फँसे हुए युवकों को मुक्त किया और उन्हें उनके स्वत्व से परिचित कराया | उनकी कविता भारतीयों को उनके भाव-जगत से परिचय कराती है | इस कविता को अभिप्रेरणा, उत्साह एवं नवसृजन की कविता कहा जा सकता है जहाँ कवि ने निद्रा-सम्मोहित भारतीयों को जागरण का स्वर प्रदान किया है | कवि का अथाह विश्वास है कि भारतीय अपने संख्या बल और शक्ति से काल की दिशा भी बदलने में सक्षम हैं | इनके भीतर वह योग्यता और शक्ति है जिसके बल पर ये पुनः भारत को गौरवशाली राष्ट्र बना सकते हैं | इसी अनुपम विश्वास के बल पर कवि कहते हैं -

है ज्ञात क्या तुमको नहीं, तुम लोग तीस करोड़ हो,
यदि ऐक्य हो तो फिर तुम्हारा कौन जग में जोड़ हो ?
उत्साह-जल से सींचकर हित का अखाड़ा गोड़ दो,
गर्दन अमित्र अध: पतन की ताल ठोंक मरोड़ दो ||

हिंदी की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा में मैथिलीशरण गुप्त जी का अतुल्य योगदान है | उनकी कविताएँ बहुआयामी हैं जिनमें देश-काल की विविध अर्थ छटाएँ हैं | व्यक्ति, समाज, शिक्षा, राजनीति एवं राष्ट्र के कतिपय प्रश्न उनकी कविताओं में मुखर होकर सजीव हो उठते हैं | उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से अंग्रेजी दासता के बीच भारतीयों की पराधीन मानसिकता को प्रकट करने के साथ उससे मुक्त होने के उपाय भी बताए जिससे कि भारत उत्कर्ष को प्राप्त हो सके | उनकी काव्य-धारा को जागरण एवं समुन्नति की काव्य-धारा कहा जा सकता है जहाँ कवि को भारत की सर्वदिशीय प्रगति अपेक्षित है |

हिंदी की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा में सुभद्राकुमारी चौहान जी का नाम भी आदर से लिया जाता है | सुभद्रा जी का जीवन बाल्यकाल से ही देश और समाज को समर्पित था | उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के लिए बाल्यकाल से ही संघर्ष किया | एक कवि के साथ-साथ उनमें एक कुशल नेत्री एवं आन्दोलन कर्मी के गुण भी परिलक्षित होते हैं | स्वतंत्रता आन्दोलन में नारी-शक्ति की भूमिका और उपादेयता की दृष्टि से उनकी कविताएँ महत्वपूर्ण हो जाती हैं | यदि भारतीय नारी के बलिदान, स्वाभिमान एवं अदम्य साहस की झलक देखनी हो तो सुभद्रा जी के निजी जीवन एवं कृतित्व में आसानी से उसे देखा जा सकता है | घर-बाहर नारी की जो बहुआयामी भूमिका है उसे अपने लेखन और जीवन से सुभद्रा जी दर्शाती हैं | 'झाँसी की रानी', 'झाँसी की रानी की समाधि पर', 'विजयादशमी' आदि कविताओं में उन्होंने खुलकर स्वतंत्रता के बहाने नारीत्व को अभिव्यक्ति प्रदान की है | रानी लक्ष्मीबाई की समाधि पर लिखते हुए उसे पराक्रम और वीरता की पुन्यस्थली के तौर पर कवयित्री ने देखा है | वह प्रशंसाबोध में कहती हैं-

इस समाधि में छिपी हुई है
एक राख की ढेरी |
जलकर जिसने स्वतंत्रता की
दिव्य आरती फेरी ||

यह समाधि, यह लघु समाधि है,
झांसी की रानी की |
अंतिम लीलास्थली यही है
लक्ष्मी मर्दानी की ||

जलियांवाला बाग़ के नृशंस हत्याकाण्ड पर सुभद्रा जी ने एक से बढ़कर एक कविताएँ लिखीं और भारतीयों की शोकावस्था के अंग्रेजों के दमनतंत्र को उजागर किया | सुधा चौहान जी ने जलियांवाला हत्याकाण्ड और सुभद्रा जी के रचना-कर्म को याद करते हुए लिखा है कि - "जलियांवाला बाग हत्याकांड हो चुका था | सरकार की सारी कोशिशों के बाद भी धीरे-धीरे उस जातीय अपमान की बात लोगों को मालूम हो रही थी और उनका क्षुब्ध आत्म गौरव इस अन्याय के प्रतिकार के लिए सन्नद्ध हो रहा था | लिखने वाले के लिए उसकी लेखनी सबसे बड़ा हथियार है | सुभद्रा ने इस जलियांवाला बाग हत्याकांड पर कुछ बहुत ही मार्मिक कविताएँ लिखीं | एक कविता में

वसंत से निवेदन है कि है ऋतुराज, तुम आओ, परंतु यह स्थान शोक का है, यहाँ बच्चे मरे हैं, बूढ़े मरे हैं, नवयुवतियाँ अपमानित हुई हैं | उनके माथे का सिंदूर, उन बूढ़ों का सहारा, उन दूध-मुँहे बच्चों का पालनहार सिपाहियों की गोलियों से भूंज डाला गया है, इसलिए हे वसंत, तुम धीरे से आना और इन अभागों की याद में कुछ मुरझायी हुई कलियाँ भर यहाँ गिरा देना |"

सुभद्राकुमारी चौहान जी की कविताएँ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के हर एक अधिवेशन और आन्दोलन की साक्षी है | इसका बड़ा कारण एक नेत्री के तौर पर उनका निजी जीवन है | सुभद्रा जी मात्र कवयित्री भर नहीं हैं बल्कि देश जागरण में बढ़चढ़कर हिस्सा लेने वाली एक कुशल नेत्री भी हैं | विवाह के बाद तो उनकी साहित्यिक और सामाजिक प्रतिबद्धता विशेष जान पड़ती है | सुधा चौहान जी उनके पति लक्ष्मण सिंह जी की पत्रकारिता के प्रति निष्ठा और सुभद्रा जी की कांग्रेस के प्रति प्रतिबद्धता को व्यक्त करते हुए लिखा है कि - "लक्ष्मण सिंह 'कर्मवीर' के साहित्य संपादक थे और बाकी समय में कांग्रेस का काम करते थे, सुभद्रा भी उनके साथ-साथ काम करती थीं किंतु लक्ष्मण सिंह को कर्मवीर की संपादकी के कारण अधिकतर जबलपुर में ही रहना पड़ता था |सुभद्रा के लिए यह बंधन नहीं था, वे कांग्रेस के काम से जबलपुर से बाहर भी जाती -आती रहती थीं | जब झंडा सत्याग्रह का केंद्र जबलपुर से हटकर नागपुर पहुँच गया, तो सुभद्रा भी नागपुर के असहयोग आश्रम में रहने लगीं |"सुभद्राकुमारी चौहान जी देश के प्रति पूर्णतः समर्पित थीं यही कारण है कि उनकी कविताओं के केंद्र में राष्ट्रीयता और राष्ट्र प्रेम की भावना है जो विभिन्न दृष्टियों से अहम है | यदि भारतीय स्वतंत्रता के ऐतिहासिक कालक्रम को समझना हो तो इस दृष्टि से सुभद्रा जी की कवितायें अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती हैं | जेल में कैद स्वतंत्रता सेनानियों के उत्साह और अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों की भर्त्सना करती हुई इन कविताओं में स्वतंत्रता की चाह और देशहित सर्वस्व अर्पित करने की भावना मुखर होती है | हर तरह की बाधाओं और व्याधियों से टकराती हुई इन कविताओं में कभी न हार मानने की प्रबल प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है | बात यदि सुभद्रा जी की 'बिदा' कविता की करें तो यह अंग्रेजों के गिरफ्तारी वारंट की कलई खोलती है | इस कविता में जहाँ ब्रिटिश दमन की जीवंत झलक है वहीं भाई-बहन के स्नेहिल प्रेम को दृष्टांत बनाकर देशहित सहर्ष गिरफ्तार होने की आकंठ लालसा है | इस कविता में कवयित्री ने भारतीयों को प्रेरित किया है कि देशहित जेल जाना अपमान का नहीं वरन सम्मान का प्रश्न है | जेल को उन्होंने परमपुनीत तीर्थ कहकर भारतीयों को अभिप्रेरित किया है | वह लिखती हैं –

तिलक,लाजपत, गांधीजी भी
बंदी कितनी बार हुए |
जेल गए जनता ने पूजा,
संकट में अवतार हुए ||
जेल ! हमारे मनमोहन का
प्यारा पावन जन्म स्थान !
तुझको सदा तीर्थ मानेगा
कृष्ण-भक्त यह हिंदुस्तान ||

'विजयादशमी' कविता में सुभद्राकुमारी चौहान जी प्रभु श्रीराम को याद करती हैं | त्याग-तितिक्षा और संघर्ष की गौरव-गाथा के सहारे पराधीन भारत को स्वतंत्र कराने की चाह इस कविता में दिखती है | यह कविता ओज एवं उदात्तता की अपूर्व निधि है जिसमें भारतीयों को चिर-निद्रा से जगाने का बोध है | सुभद्रा जी मिथकीय आदर्शों का निरूपण करती हुई लिखती हैं -

रामचंद्र की विजय-कथा का
भेद बता आदर्श सखी!
पराधीनता से छूटे यह
प्यारा भारतवर्ष सखी!

भारतीय इतिहास साक्षी है कि स्वतंत्रता आंदोलन में जितनी भूमिका पुरुषों की रही उतनी ही स्त्रियों की रही जिन्होंने न केवल पुरुषों को भारत की स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया वरन स्वयं देशहित संघर्ष किया | 'विजयादशमी' कविता में सुभद्रा जी भारतीय नारी-शक्ति को दर्शाती हैं जो ओज एवं उत्साह की साकार प्रतिछवि हैजिसे किसी बात का भय नहीं | उनका विश्वास है कि भारतीय नारी स्वतंत्रता के लिए तनिक भी पीछे नहीं हटेगी और अपनी प्रचण्ड शक्ति से जीवन को नव-दिशा देगी |वे कहती हैं कि यदि पुरुष पीछे हट गए तब भी भारत की नारी-शक्ति पीछे न होगी | वह पराधीनता की कारा को काटकर नवनिर्मिति हेतु सन्नद्ध है | सुभद्रा जी की कविताओं की विशिष्टता नारी-शक्ति के संधान के सहारे राष्ट्र जागरण में है | वह स्पष्ट कहती हैं-

सबल पुरुष यदि भीरु बने,
तो हमको दे वरदान सखी !
अबलाएं उठ पड़ें देश में,
करें युद्ध घमासान सखी !
पंद्रह कोटि असहयोगिनियाँ
दहला दें ब्रह्मांड सखी !
भारत- लक्ष्मी लौटाने को,
रच दें लंकाकांड सखी !

सुभद्रा जी का मनोजगत स्वाधीन भारत की कल्पना करता है | उनके मानसिक अवबोध में देश-जागृति का स्वप्न है | 'स्वदेश के प्रति' कविता में सुभद्रा जी स्वतंत्रता की चाह रखती हैं | प्रस्तुत कविता को हर्ष, उत्साह एवं उमंग की कविता कहा जा सकता है | जहाँ कवयित्री ने स्वदेश को उन्नति के शिखर पर आसीन होने का स्वप्न देखा है | तभी वह कहती हैं-

आ, स्वतंत्र प्यारे स्वदेश आ,
स्वागत करती हूँ तेरा |
तुझे देखकर आज हो रहा
दूना प्रमुदित मन मेरा ||
आ, उस बालक के समान
जो है गुरुता का अधिकारी |
आ, उस युवक वीर-साजिसको
विपदाएँ ही हैं प्यारी ||
आ, उस सेवक के समान तू
विनय-शील अनुगामी-सा |
अथवा आ तू युद्ध क्षेत्र में
कीर्ति- ध्वजा का स्वामी-सा ||

हिंदी की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा में बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जी की भूमिका भी अग्रगण्य है | उन्होंने कवि, कवित्व-शक्ति और रचना के माध्यम से देश में युग परिवर्तन की बात कही | उनकी कविताओं में देश -राग का स्वर तो दिखता ही है इसके साथ उसे युग परिवर्तक के तौर पर देखा गया है | बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जी कवि को जागृत करते हुए कहते हैं -

कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाये,
एक हिलोर इधर से आये एक हिलोर उधर से आये,
प्राणों के लाले पड़ जायें, त्राहि-त्राहि स्वर नभ में छाये,
नाश और सत्यानाशों का धुआंधार जग में छा जाये
बरसे आग, जलद जल जाये, भस्मसात भूधर हो जायें,
पाप-पुण्य सदसद् भावों की धूल उड़ उठे दायें- बायें;
नभ का वक्षस्थल फट जाये, तारे टूक-टूक हो जायें,
कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाये,

सभ्यता-विमर्श की आड़ में अंग्रेज स्वयं को श्रेष्ठ एवं भारतीयों को हेय

समझ रहे थे | स्वयं को आधुनिक एवं प्रगतिशील कहने वाले ब्रिटिश साम्राज्यवादियों को नवीन जी ने अपनी कविताओं के सहारे वास्तविक आईना दिखाना चाहा है | उनकी कविताओं में भारतीयों की दीन-हीन स्थिति एवं पराजित अवस्था का दर्शन होता है | कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जी ने 'जूठे पत्ते' कविता में अंग्रेजों को अत्याचारी एवं विप्लवकारी के नियंता के तौर पर चित्रित किया है जिन्होंने सम्पूर्ण भारतीय व्यवस्था को छिन्न-भिन्न कर दिया | भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक अस्मिता को दांव पर लगाकर भारतीयों को अवश बनाने वाले भारतीयों पर कटाक्ष करते हुए वह लिखते हैं कि -

क्या देखा है तुमने नर को नर के आगे हाथ पसारे ?
क्या देखे हैं तुमने उसकी आंखों में खारे फव्वारे ?
देखे हैं ? फिर भी कहते हो कि तुम नहीं हो विप्लवकारी ?
तब तो तुम हिजड़े हो, या हो महा भयंकर अत्याचारी !

अरे चाटते जूठे पत्ते जिस दिन मैंने देखा नर को
उस दिन सोचा : क्यों न लगा दूँ आग इस दुनिया-भर को ?
यह भी सोचा : क्यों न टेंटुआ घोंटा जाय स्वयं जगपति का ?
जिसने अपने ही स्वरूप को रूप दिया इस घृणित विकृति का |

नवीन जी की कविता भूख, गरीबी एवं निस्सहाय जीवन को व्यक्त करने के साथ अंग्रेजों की क्षद्र नीतियों को दर्शाती है जिस पर कवि ने खुलकर लिखा है | भारतीयों की दयनीय स्थिति को देखकर कवि 'नवीन' जी की कविता में रोष के सोते फूटते हुए दिखाई पड़ते हैं | 'गरल पियो तुम ! गरल पियो तुम !!' कविता में बालकृष्ण शर्मा नवीन जी शिव के रुद्रावतार का आवाहन करते हैं जिससे कि भय, असुरक्षा एवं आतंक के अंग्रेजी शिविरों का भेदन हो सके और स्वातंत्र्य, एकत्व का भाव संचरित हो सके -

आज रूद्र ललकार रहे हैं : अमृत पुत्र, लो, गरल पियो तुम,
आज अमर बेला आयी है, गरल पियो,चिरकाल जियो तुम;
ओ तुम चिर जीवन के प्यासे, सुन लो यह भैरव आवाहन;
हिम गिरिवर के तुंग श्रृंग से गूंज रहा है घण्टा घन-घन !
प्रलयंकर शंकर बैठे हैं खोले वरदानों की झोली;
जागो, ग्रहण करो वर उनका, बढ़े चलो टोली की टोली |

हिंदी की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा की बात हो और दिनकर की बात न हो, ऐसा संभव नहीं | दिनकर भारतीय ऋषियों की आर्ष वाणी हैं जिनकी कविताओं में समूचा भारत बोलता है | दिनकर की कवितायें रूप -यौवन एवं आकर्षण की कहानी भर नहीं कहतीं बल्कि भारत की ज्ञान-चेतना एवं अपूर्व गौरव का साक्षात्कार कराती हैं | इन कविताओं में गाँधी युग और उसके प्रभाव की झाँकी तो मिलती ही है साथ ही सत्य के लिए, ज्ञान के लिए क्रान्ति-पथ का वरण करती हुई कवि की नव्य-चेतना भी दिखती है | एक तरह से कह सकते हैं कि दिनकर की कविताओं में पूरे भारत का दिग्दर्शन होता है क्योंकि यहाँ केवल रूप की छाया मात्र नहीं है बल्कि अन्तस की उदग्रता भी भरपूर है | योग-भोग, कर्म-धर्म, सत्य-निष्ठा के विविध रूपों के साथ देश-गौरव की चिंता इन कविताओं का अभीष्ट है | दिनकर एक युवा कवि के तौर पर जब सृजनरत थे तब उनकी कविताओं पर स्वतंत्रता प्रेमियों का प्रभाव पड़ रहा था,इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता | दिनकर के युवा-मन की थाह लेते हुए विजेंद्र नारायण सिंह जी लिखते हैं कि- "युवावस्था में सौंदर्य और विलास का सहज आकर्षण होता है पर जब देश-माँ के पैरों में जंजीर बंधी हो और लोग भूखे हों तब रूप-पूजा का यह समय नहीं होता है | कवि युवावस्था के सहज आकर्षण का परित्याग कर क्रांति-पथ का वरण करता है | दिनकर की राष्ट्रीयता गांधीवाद की चेतना की देन नहीं है वरन उस समय जो लोग हथियार उठाकर अंग्रेजों से लड़ रहे थे, वे ही दिनकर की राष्ट्रीयता और तज्जन्य क्रांतिकारी कविताओं के उत्स हैं|"दिनकर अपनी कृतियों में भारत की तपश्चर्या, सहनशीलता, अहिंसक वृत्ति को दर्शाते हैं और उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा भी करते हैं क्योंकि मानवीय गुणों एवं मूल्यों द्वारा ही देश और राष्ट्र को दिशा दी जा सकती है | किन्तु उनकी कविताओं में किंकर्तव्यविमूढ़ता एवं सत्य का अनुबंध नहीं है | वे पौरूष के कवि हैं | अच्छे साध्य के लिए, सद्मार्ग एवं अधिकारों के लिए शस्त्र के वरण को वे उपयुक्त समझते हैं | 'कुरुक्षेत्र' में दिनकर न्यायोचित अधिकारों की बात करते हैं और उसे हर दृष्टि से उपयुक्त समझते हैं | हिंसा-अहिंसा में सम्यक भेद स्थापित करते हुए धर्म के मार्ग पर धीर-पथिक के लिए वे हिंसा को भी श्रेयस्कर समझते हैं | कुरुक्षेत्र' के तृतीय पर्व में दिनकर लिखते हैं -

न्यायोचित अधिकार माँगने
से न मिलें, तो लड़के,
तेजस्वी छीनते समर को
जीत, या कि खुद मर के |
किसने कहा, पाप है समुचित
स्वत्व-प्राप्ति-हित लड़ना ?
उठा न्याय का खड्ग समर में
अभय मारना- मरना ?

दिनकर अपनी अधिकांश कविताओं में संस्कृति, राष्ट्र एवं राष्ट्रीय प्रश्नों को नीतिगत ढंग से उठाते हैं | उनकी कविताओं में संस्कृति को बारीक ढंग से व्याख्यायित किया गया है | दिनकर की देश-आधारित कविताओं का फलक अत्यंत विस्तीर्ण है | समूचे राष्ट्र के अतीत, वर्तमान और भविष्य की सुन्दर गाथा उन्होंने 'उर्वशी' 'रश्मिरथी', 'कुरुक्षेत्र' आदि काव्य संग्रहों में प्रस्तुत किया है | गद्य कृतियों 'संस्कृति के चार अध्याय' तो देश के ऐतिहासिक विकास की अनूठी कृति है जिसमें भारत का स्वर्णिम युग भासित होता है | स्वतंत्रता के पूर्व और स्वतंत्रता के बाद की सुन्दर रेख उनकी कविताओं में स्पष्ट दिखती है | देश की स्वतंत्रता के बाद जब भारतीय पुनः मोहाग्रस्त होने लगे दिनकर ने अपनी लेखनी के द्वारा उन्हें जागृत किया | 1962 के अक्टूबर मास में जब चीन ने भारत पर आक्रमण किया | यह अत्यंत हृदय विदारक घटना थी, पूरा विश्व भारत की ओर देख रहा था | ऐसा लग रहा था भारत, चीनी आघात को सह नहीं पायेगा ऐसी विषम घड़ी में दिनकर अपनी डायरी में रक्त-स्नान की आवश्यकता एवं अनिवार्यता की बात करते हैं | उन्हें लगता है कि आज़ादी के महत्व को भूल चुके भारतीयों की आत्मा को झकझोरने की दृष्टि से यह युद्ध अत्यंत आवश्यक है | 27 अक्टूबर 1962 को उन्होंने अपनी डायरी में लिखा–"चीनी आक्रमण घोर शाप है, लेकिन वह वरदान में बदला जा सकता है, अगर सरकार जनता के उत्साह को दिशा दे सके | लड़ाई देर तक चले और सभी इलाकों के लोग उससे थोड़ा जल सकें, तभी जनता यह समझेगी कि आजादी कितनी कीमती चीज़ है और उसकी रक्षा कैसे की जानी चाहिए ?

रक्त-स्नान से भारत शुद्ध हो सकता है | अग्नि-स्नान से देश की ताकत बढ़ सकती है | विपत्तियों के झकोर से वह स्वराज्य ज़िंदा किया जा सकता है, जो पार्सल से आया था |"

इस तरह देख सकते हैं कि दिनकर एक सचेष्ट कवि हैं | उनकी रचनाशीलता केवल शिल्प का आग्रह भर नहीं है बल्कि उसमें भाव, सौन्दर्य एवं राग की अपूर्व छाप दिखाई पड़ती है | लोक-राग के सहारे दिनकर देश-राग को बचाने की बात करते हैं | हिंदी की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा में उनके महत्त्व को भुलाया नहीं जा सकता | दिनकर भारतीय एवं पाश्चात्य ज्ञान-चेतना के गंभीर अध्येता हैं | किन्तु

उन्होंने पश्चिम के आचरण को स्वीकार नहीं किया उनकी कविताओं में भारतीय नवजागरण का प्रभाव दिखता है | और इसी प्रभाव के बल के प्रभाव से उन्होंने समूची पश्चिमी चिन्तन-धारा को चुनौती दी | पश्चिम के तर्कवाद को समझते-बूझते हुए भी दिनकर भारतीय भावबोध के अपूर्व गायक हैं | नवजागरण के संदर्भ में भारतीय चिंतकों का यह अपूर्व प्रभाव ही था कि दिनकर की राष्ट्रीय चेतना का नित्यप्रति विकास होता रहा | डॉ. विजेंद्र नारायण सिंह जी इस संदर्भ में लिखते हैं कि - "नवजागरण के प्रबल बौद्धिक उद्रेक के साथ ही देशभक्ति की भावना जुड़ी हुई है | प्रवृत्ति के उत्थान से उपनिवेशवाद का विरोध सीधा जुड़ा हुआ है जो उनकी कविता का प्रमुख प्रतिपाद्य है | नवजागरण ने ही उन्हें वह सामर्थ्य दी, जिससे उन्होंने भाग्यवाद को संपूर्णतः नकार दिया | वे ऐसे कवि नहीं है जो पाश्चात्यवाद की आँधी में उड़ जाएँ | उन्होंने वंध्या बुद्धिवाद की अपेक्षा भावना को अधिक महत्व दिया | यह उनकी ही नहीं वरन हिंदी नवजागरण की भी अपनी विशेषता है |"

हिंदी की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा की सबसे बड़ी विशेषता रही कि कवियों ने देश को जीवित प्रतीक मानकर नव-प्रेरणा एवं राष्ट्र-जागरण की भावना का संचार किया | अतीत की घटनाओं, दृश्यों एवं आंदोलनों को आधार मानकर कवियों ने देशहित में बात की | डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल जी इस संदर्भ में लिखते हैं कि "रागात्मक चेतना का एक दूसरा रूप वह है जिसमें कवि देश को एक जीवित-प्रतीक की तरह मानकर नमन करता है, उसकी रक्षा के प्रति सजग हो उठता है | देश का पूरा इतिहास वीरों की वीर गाथाएँ गा उठता है | चित्तौड़, हल्दी घाटी, गंगा-हिमालय उसके लिए प्रेरणा-स्त्रोत बन जाते हैं | इतिहास अतीत से वर्तमान का संवाद बन जाता है और वह जाति की धमनियों में रक्त बनकर दौड़ने लगता है |"

हिंदी की राष्ट्रीयसांस्कृतिक काव्यधारा पर विविध कवियों एवं चिंतकों का प्रभाव रहा है | भारतेंदु, इकबाल, रवींद्रनाथ, काजी नजरुल, सुब्रह्मण्यम भारती,पुट्टप्पा,सीताकांत महापात्र आदि कवियों से भाव-उष्मा लेकर हिंदी के कवियों ने जो अखण्ड भारत की सुन्दर तस्वीर खींची वह अनुपम एवं अनूठी है | कवियों एवं साहित्यकारों के साथ-साथ इस काव्यधारा पर रानी लक्ष्मीबाई, तिलक, लाला लाजपत राय, महात्मा गाँधी, सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद जैसे देश प्रेमियों के चिंतन एवं राष्ट्रप्रेम की जीवंत झलक भी दिखाई पड़ती है | हिंदी की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा ने लोक से रस ग्रहण किया है | यह मात्र शब्दकारी एवं कलाकारी का साहित्य भर नहीं है बल्कि यह जीवन-धारा एवं जीवन-गति का साहित्य है जिसमें भारत की बदलती हुई परिस्थितियाँ, घटनाएँ एवं दृश्यावलियाँ जिनसे भारत की समग्र तस्वीर बनती है | "व्यापक सन्दर्भों में कह सकते हैं कि इस राष्ट्रीय-सांस्कृतिक कविता में मानव-मूल्य, सांस्कृतिक-नैतिक मूल्य, धार्मिक-सामाजिक मूल्य परस्पर एक साथ गुँथे हुए हैं | जीवन-मूल्यों का यह तादात्म्य अन्य प्रकार की कविताओं में इस ढंग और इस रासायनिक योग से हो ही नहीं पाया है | इसका प्रधान कारण यह है कि इस राष्ट्रीय-सांस्कृतिक कविताधारा में आनंदवादी-कलावादी जीवन-मूल्यों की प्रधानता न होकर लोक-मंगल वादी, मानववादी मूल्यों को एकांत स्वीकृति मिली है | प्रेम की यहाँ अवहेलना नहीं है पर वह व्यक्ति प्रेम से हटकर राष्ट्र-प्रेम में रूपांतरित हो गया है | जीवन के रोमानी काव्य-मूल्यों में गर्क न होने के कारण यह कविता लोक-जागरण की समग्र अभिव्यक्ति है |"

****

संदर्भ :-

1. सुधाकर पाण्डेय (संपादक), 'हिंदी काव्य गंगा', पृष्ठ संख्या- 358
2. कृष्णदत्त पालीवाल, 'मैथिलीशरण गुप्त प्रासंगिकता के अन्तः सूत्र', पृष्ठ संख्या- 126
3. सुधाकर पाण्डेय (संपादक), 'हिंदी काव्य गंगा', पृष्ठ संख्या- 438-439
4. मैथिलीशरण गुप्त, 'भारत भारती', पृष्ठ संख्या – 14
5.मैथिलीशरण गुप्त, 'भारत भारती', पृष्ठ संख्या – 163
6. मैथिलीशरण गुप्त, 'भारत भारती', पृष्ठ संख्या – 166
7. चंद्रा सदायत' (संपादन), 'सुभद्रा कुमारी चौहान की श्रेष्ठ कविताएँ, पृष्ठ संख्या- 130
8. सुधा चौहान, 'भारतीय साहित्य के निर्माता सुभद्रा कुमारी चौहान', पृष्ठ संख्या- 14
9. सुधा चौहान, 'भारतीय साहित्य के निर्माता सुभद्रा कुमारी चौहान', पृष्ठ संख्या- 20
10. चंद्रा सदायत' (संपादन), 'सुभद्रा कुमारी चौहान की श्रेष्ठ कविताएँ, पृष्ठ संख्या- 106
11. चंद्रा सदायत' (संपादन), 'सुभद्रा कुमारी चौहान की श्रेष्ठ कविताएँ, पृष्ठ संख्या- 92
12. चंद्रा सदायत' (संपादन), 'सुभद्रा कुमारी चौहान की श्रेष्ठ कविताएँ, पृष्ठ संख्या- 93
13. चंद्रा सदायत' (संपादन), 'सुभद्रा कुमारी चौहान की श्रेष्ठ कविताएँ, पृष्ठ संख्या- 96
14. नरेशचंद्र चतुर्वेदी (संपादन), 'बालकृष्ण शर्मा नवीन काव्य रचनावली', पृष्ठ संख्या- 1176
15. नरेशचंद्र चतुर्वेदी (संपादन), 'बालकृष्ण शर्मा नवीन काव्य रचनावली', पृष्ठ संख्या- 1223
16. नरेशचंद्र चतुर्वेदी (संपादन), 'बालकृष्ण शर्मा नवीन काव्य रचनावली', पृष्ठ संख्या- 1165
17. विजेंद्र नारायण सिंह, 'भारतीय साहित्य के निर्माता रामधारीसिंह दिनकर', पृष्ठ संख्या-62
18. नंद किशोर नवल,तरुण कुमार (संपादन), 'रामधारी सिंह 'दिनकर' रचनावली',भाग-05, पृष्ठ संख्या-77
19. नंद किशोर नवल,तरुण कुमार (संपादन), 'रामधारी सिंह 'दिनकर' रचनावली',भाग-13, पृष्ठ संख्या-211
20. विजेंद्र नारायण सिंह, 'भारतीय साहित्य के निर्माता रामधारीसिंह दिनकर', पृष्ठ संख्या-53
21. कृष्णदत्त पालीवाल, 'मैथिलीशरण गुप्त प्रासंगिकता के अन्तः सूत्र', पृष्ठ संख्या- 150
22.कृष्णदत्त पालीवाल, 'मैथिलीशरण गुप्त प्रासंगिकता के अन्तः सूत्र', पृष्ठ संख्या- 159